International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com
ICMRS'23

उपशास्त्रीय संगीत के रचनाओं की विशेषताएँ

प्रा. डॉ. अंजू सुर्यभान फुलझेले
संगीत विभाग, अमोलकचंद महाविद्यालय, यवतमाल

सारांश :

भारतीय संगीत आरम्भ से ही दो धाराओं में प्रवाहित होता रहा | प्रथम धार्मिक समारोहों पर जिसमें धार्मिक विधि विधान होता था और दुसरा लोकीक समारोहों पर प्रयुकत होता था | जिसका उद्देश्य केवल लोगों का मनोरंजन करना था | प्रथम धारा मार्ग कहलाई और दूसरे को देशी की संज्ञा दी गई | दोनों का मूलाधार या स्त्रोत जनसंगीत था | केवल अंतर यह था की प्रथम को संस्कार परिष्कार तथा शास्त्राधार प्राप्त होने से उच्च श्रेणीय या शास्त्रीय संगीत में स्थान प्राप्त हुआ | तथा दुसरा लोकरूचि के अनुकूल विकसित होने के कारण जनता में लोकप्रिय हुआ | लोकसंगीत से शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है और शास्त्रीय संगीत से ही उपशास्त्रीय संगीत अस्तित्व में आया होगा | क्योंकि माना जाता है कि उपशास्त्रीय संगीत की शैलियाँ जैसे – ठुमरी, टप्पा, कजरी, चैती, होरी, दादरा सब मूल रूप में लोकसंगीत ही था और इन्ही रूपों में आज भी है | शब्द, स्वर और ताल यह बंदिश (गीत) रचना के मुल घटक है | उपशास्त्रीय बंदिशों में स्वर की योजना, लगाव की शैली, रखाव का ढंग, लय की योजना, तालो का चयन शब्दों का कम-अधिक प्रयोग यह उपशास्त्रीय रचनाओं की विशेषताओं में आते है |

बीज शब्द : उपशास्त्रीय संगीत, बंदिश, ताल, शब्द, स्वर.

भूमिका :

उपशास्त्रीय संगीत में राग की शुद्धता से अधिक भाव सौन्दर्य एवं रस माधुर्य को महत्व दिया जाता है | इसमें पद के साहित्यिक सौंदर्य को आधार मानकर उसके भावपक्ष की ओर जर दिया जाता है | परंतु इन भावों को स्वर से ही स्पष्ट किया जाता है | इसमें श्रृंगारिक भावना अधिक है, तथा शैली रसीली है | इसके गीत शैलियों में गंभीर राग या ताल नहीं होते | उपशास्त्रीय संगीत में नियमों का शिथिल प्रयोग संगीत को चमत्कारिक एवं विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है | इसमें भावप्रधान, चपलताल, मूर्की, ख्याल, पूकार एवं बहलावे, सहजता, हृदयग्राही, रस, इ. का प्रयोग मंत्रमुग्ध कर देता है | उपशास्त्रीय संगीत विधाओं की रचनाओं में ये सभी विशेषताएँ दिखती है |

शोध का महत्व :

उपशास्त्रीय गीत प्रकारों की बंदिशों में स्वर के साथ-साथ शब्दों का भी महत्व बराबर का होता है | शब्द इस रचना प्रकार के भाव का अर्थ प्रकट करते है | सभी रचना प्रकार रागों पर आधारित होते है | रचना प्रकारों के विशिष्ट स्वर वाक्यों में बंदिश के शब्दों को सुंदरता से पिरोकर शब्दों का अर्थ, भाव ज्यादा स्पष्ट करना इस रचना प्रकार का लक्ष्य है |

शोध का उद्देश्य :

1) बंदिशों का विश्लेषण, विस्तार स्वरूप करना |
2) उपशास्त्रीय बंदिश
3) संगीत छात्रों के लिए उपयुक्त |

शोधपूर्व अनुसंधान साहित्य :

1) उपशास्त्रीय रचनाओं के रेकॉर्डस |
2) बंदिशों के नोटेशन |

अनुसंधान पद्धती :

बंदिश को सुनकर उसका सूक्ष्म अध्ययन किया |

International Journal for Multidisciplinary Research
International Conference on Multidisciplinary Research & Studies 2023
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

इस विधा की कुछ रचनाओं का विश्लेषण इस प्रकार से है -

राग भैरवी की ठुमरी **ताल अध्धा त्रिताल**

स्थायी – अकेली मत जैयो राधे जमूना के तीर
अंतरा – कैसे कहूँ कसहां सिया बजादे

स्थायी

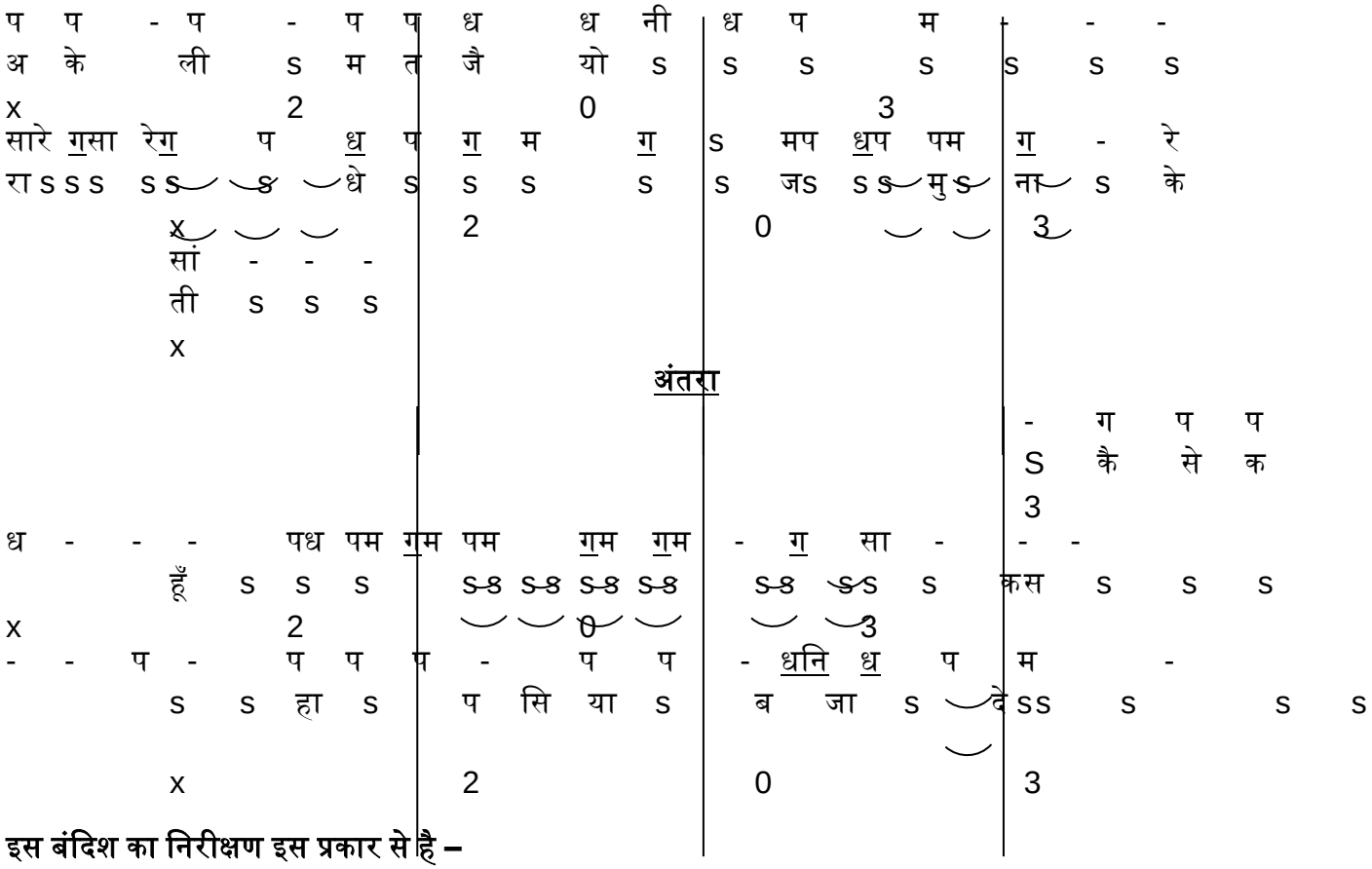

अंतरा

इस बंदिश का निरीक्षण इस प्रकार से है –

1) छोटे ख्याल की बंदिश और ठुमरी की संधी पर बंदिश की ठुमरी रहती है | इस प्रकार की बंदिशे प्राय अध्धा ताल में होती है | इसके शब्दों को विस्तारीत करते समय भावप्रधानता उभर कर आती है | शब्दो से ही आलाप किए जाते है | आलापो का कार्य रागविस्तार करना यह नहीं होता बल्कि भावप्रदर्शन के लिए अनुकूल आलापों की योजना होती है | वास्तविक 'जमूना के तीर' यह शब्द दूसरी पंक्ति के अंत में आते है, लेकिन बंदिश इस तरह से रची है की मुख्य सम 'अकेली' या 'राधे' इन शब्दों पर नही बल्कि 'तीर' इस शब्द पर है ऐसा लगता है | अत: मुखडे मे ही जमुना के तीर, राधे, जमूना के तीर / अकेली मत जैयो राधे / मत जैयो राधे इतनी विविधतासे भावप्रदर्शन किया जा सकता है | यह ठुमरी की विशेषता है |

2) प्रस्तुत भैरवी की ठुमरी में स्वर सौंदर्य की दृष्टी से दुसरी पंक्ति में भैरवी राग का आरोही चलन अच्छी तरह से स्पष्ट होता है | सारे गसा रेग प ध पग म गs मप धप पम ग -रे यह रागवाचक समुहदाय, जो की मुखडे में ही भैरवी राग को स्पष्ट करता है |

3) ठुमरी में तालों का अलग प्रांत नहीं होता | छोटी-छोटी मूरकिया ही तानों का कार्य करती है | फिर भी उस्ताद बडे गुलाम अली, बरकत अली आदि की ठुमरियों में हम आखरी में आनेवाली दीर्घ लंबी तान वैशिष्ट्यपूर्ण होती है | ठुमरी के खास अलंकार होते है – मींड की जगह मूरकी होती है | इस बंदिश में कुछ जगहों पर तान का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे - सारे गसा रेग पध , मप धप पम ग , पध पम गम पम गम गम गs |

4) ~~यह ठुमरी अध्धा तीन ताल में गायी~~ हुअी ~~है, जो सुनने मिलती है उसकी ताल~~ में लिपी इस तरह नही होती | गायक अक्सर गाते समय ऐसा स्वातंत्र्य लेते है | इस रचना की शुरूवात ही सम से की गई है | 'तीर' शब्द सम पर पडते ही

वातावरण निर्मिती करता है | इस बंदिश में सम बहोत प्रभावित रूप से आती है | जब गायक इस सम के शब्दा को अलग अलग varieties के साथ 'जमूना के तीर' वारंवार गाते है तो श्रोतागण बहोत दाद देते है |

5) बंदिश के अंत में लग्गी का प्रयोजन दिखता है | ठुमरी अपनी मुख्य लय / धीमी लय में अपनी सौंदर्यात्मक छटाओं के विविध रंग दिखाती हुई श्रोता के हृदय तक पहुचने का काम करती है | अंत में कहरवा की द्रुत लय में लग्गी लगायी जाती है | इस लग्गी के दौरान गायक शब्द और स्वरों का अनोखा खेल रचाती है |

राग : मिश्रमारूबिहाग ताल : विलंबित दादरा

बालमा ओ मोरे सैया,
बाट तकत हारे नैना ||
तडप तडप बिती रैना,
कासे कहूँ मैं जी के बैना ||1||
तोर बिना नाही चैना,
काहे करत ऐसी दैना ||2||

स्थायी

			नी - सा
			बा s ल
			0
ग - म गरे सानी	रेनी सा	- सारे	ग -म |
मा s ओ मोs s s s रे	सें s	s थाs बा	s ट
x 0	x	0	
प पनीध पम प | -	मग मधप | मग |	गरेसा |	
त कडऽऽ तऽऽ	हा s रेऽ	नैऽऽ ऽऽ	नाऽऽ
x	0	x	

अंतरा

			नी नी सा
			त ड प
			0
ग ग सा गम प	| म प	- प गम	पनी नीधप
त ड प	बीऽ s ती	रै s न	काऽ ऽऽ सेऽऽ
x	0	x	0
पध पध धपम व मप	मग मधप	मग गरेसा	
कऽ हूँऽ मैऽऽ	जी ऽऽ कैऽ	बैऽऽ ऽऽ	नाऽऽ
x	0	x	

दुसरा अंतरा भी समान है |

प्रस्तुत दादरा रचना का विश्लेषण इस प्रकार से है –

1) संपूर्ण दादरा की बंदिश में मारू-बिहाग राग का स्वरूप दिखता है |

2) काव्य की दृष्टि से प्रेमिका अपने प्रेमी से ना मिल पाने की व्यथा व्यक्त कर रही है | रैना, दैना, चैना, सैया, इ. आकारयुक्त शब्दों व्दारा बोल आलापी करने में सुविधा होती है |

3) प्रभा जी की रचनाओं की यह खासियत होती है की जहाँ स्थायी की पहली पंक्ति के स्वर समाप्त होते है अथवा जिन स्वरों पर वह छोडती है, दुसरी पंक्ति की रचना उसके बाद के स्वरों से शुरू होती है, जैसे आप स्थायी में देख सकते है –

सा - सारे | ग - म
सैs याs बा s ट

4) उनकी आवाज इतनी मीठी है की वह जब रचना गाती है तो उन शब्दों से उद्भवीत भाव मन मोह लेते है |

5) ताल की दृष्टि से संपूर्ण बंदिश में ताल के मात्रा और खंड अनुसार शब्दों की योजना / रखाव बडी खुबी से प्रभा जी ने की है | जहाँ अवग्रह है उस जगह पर उन्होनें अवग्रह लिया है, जहाँ स्वर है वहाँ बोलो का रखाव है | जैसे –

नि - स | ग - म
बा s ल | मा s ओ

6) इस बंदिश की एक विशेषता हमे देखने मिलती है की स्थायी की शुरूवात मंद्र निषाद से हुई, उसी प्रकार अंतरे की शुरूवात भी मंद निषादसे की गई है | संपूर्ण बंदिश मंद्र, मध्य सप्तक में बांधी गई है |

7) प्रस्तुत रचना की निर्मिती में स्वर, काव्य और ताल का चुनाव अनोखा है |

बंदिश की ठुमरी :

राग भैरवी की यह रचना तीनताल ताल में बद्ध है |

स्थायी - कैसी ये भलाई रे कन्हाई
पनियाँ भरत मोरी गगरी गिराई करके लडाई |

अंतरा - सनद कहे ऐसो ढील भयो कन्हाई, काकरूँ माई
नही मानत कन्हाई करके लडाई |

इस बंदिश का निरीक्षण इस प्रकार है |

1) यह रचना बरेली के तवक्कुल हुसैन खाँ (सनद प्रिया) इन्होंने स्वर-ताल बद्ध किया |

2) यह बंदिश की ठुमरी है जिसे बोलबांट की ठुमरी भी कहते है | इसमें रागसंगीत की प्रधानता होती है |

3) इन रचनाओं में प्राय- धृपद गान की तरह दुगुन, आड जैसी लयकारी गायकी में होती है | ये ठुमरियाँ मध्यलय में गायी जाती है |

4) ये रचनाएँ कथक नृत्यकार, गायक, सितारवादक गाते-बजाते है |

5) इस रचना की भाषा ब्रज है | इसमें भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है | इसमें श्रृंगार वर्णन है |

6) संपूर्ण बंदिश में राग की शुद्धता का ध्यान रखा है |

7) इस रचना में विस्तार की गुंजाइश कम ही है | लय से संबंधीत काम इसमें कर सकते है | मुखडे की पहली पंक्ति दोहराई नही जा सकती, संपूर्ण मुखडा ही गाना होता है | यह मध्यलय और द्रुत दानों ही लय में गाने से, इस बंदिश का सौंदर्य सुंदर प्रतित होता है |

8) इस प्रकार की रचनाएँ नृत्य के लिए ज्यादा अनुकूल रहती है | नर्तक अपने अभिनय को सजीव करके भावों को प्रकट करते हैं |

9) प्रस्तुत रचना की निर्मिती में दो चीजे है, जैसे यह बंदिश गाने में भी अच्छी लगती है तथा यह नृत्य के लिए भी बनाई गई है |

निष्कर्ष :

बंदिश संगीत को सुबद्धता प्रदान करती है | उपशास्त्रीय संगीत विधा में बंदिश के अंतर्गत स्वर, ताल और पद का सुंदर समायोजन होता है | बंदिश का काव्य संक्षिप्त होता है | बंदिश के मुखडे का जो स्वरूप होगा उसी के अनुसार राग का विस्तार होता है | इन बंदिशों में ताल का चयन भी विशिष्ट गीत विधा के अनुसार होता है | राग शुद्धता से अधिक भाव सौंदर्य एवं रस भाव पक्ष पर ध्यान दिया जाता है | बंदिश के शब्द लालित्यपूर्ण, मृदू, नादमधूर, अंतिम तुक समान रहनेवाले तथा किसी एक संपूर्ण विचार को न्यूनतम शब्दों में व्यक्त करनेवाले होते है |

संदर्भ :

1) डॉ. सुधा सहगल एवं डॉ. मुक्ता - बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत, पृ.सं. 32.
2) क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-2, पं. वि. ना. भातखंडे, पृ. सं. 394-395.
3) डॉ. प्रभा अत्रे - स्वरांगिनी, पृ. सं. 249.